International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 986-993

छायावादयुगीन प्रवृतियां एवं प्रमुख कवियों की समीक्षा

रेणु
अर्बन इस्टेट जीन्द, हरियाणा, भारत।

सारांश
'द्विवदी युग' के बाद हिन्दी में जो नयी काव्य धारा प्रवाहित हुई, उसे छायावाद की संज्ञा से अभिहित किया गया है। छायावादी काव्य की रचना 'द्विवेदी युग' के अन्तिम चरण में ही प्रारम्भ हो गई थी और आज भी हो रही है, परन्तु छायावाद का चरमोत्कर्ष–काल दो विश्व युद्धों के बीच का समय सन् 1920 से सन् 1936 तक है। छायावाद–युग खड़ी बोली काव्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। सन् 1920 तक हिन्दी में निः स्सन्देह 'छायावाद' की संज्ञा प्रचलित हो चुकी थी, क्योंकि इसी वर्ष 'श्री शारदा' पत्रिका में मुकुटधर पाण्डेय की 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक चार निबन्धों की एक लेखमाला प्रकाशित हुई थी। सन् 1921 में इसी शीर्षक से श्री सुशील कुमार का एक लेख 'सरस्वती' पत्रिका में छपा था जिसमें छायावादी कविता को 'टैगोर–स्कूल' की चित्रकला के समान अस्पष्ट बताया गया था। सम्भवतः विद्वानों ने छायावादी कविता में काव्य की 'काया' नहीं 'छाया' देखी थी और उस काव्य की अस्पष्टता (छाया) का उपहास करने के लिए ही उसे 'छायावाद' नाम दे दिया था।

मूल शब्द : व्यक्तिनिष्ठ, समीचीन, स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति, उद्गीथ, उपचार वक्रता, प्रत्यभिज्ञा।

प्रस्तावना

छायावाद का विकास द्विवेदी युगीन कविता के उपरान्त हिन्दी में हुआ। मौटे तौर पर छायावादी काव्य की समय सीमा 1918 ई0 से 1936 ई0 तक मानी जा सकती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी छायावाद का प्रारम्भ 1918 ई0 से माना है, क्योंकि छायावाद के प्रमुख कवियों पन्त, प्रसाद, निराला, ने अपनी रचनाएँ लगभग इसी वर्ष के आस–पास लिखनी प्रारम्भ की थी। 1918 में प्रसाद का 'झरना' प्रकाशित हो चुका था तथा निराला की प्रसिद्ध कविता 'जुही की कली' 1916 ई0 में प्रकाशित हुई थी। पन्त के 'पल्लव' की कुछ कविताएँ भी 1918 में प्रकाशित हो चुकी थी। प्रसाद की 'कामायनी' 1935 ई0 में प्रकाशित हुई और प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना 1936 ई0 में हुई। इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर छायावाद की अन्तिम सीमा 1936 ई0 मानना समीचीन है।

छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदी युगीन काव्य की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ, क्योंकि द्विवेदी युगीन कविता विषयनिष्ठ, वर्णन– प्रधान और स्थूल थी, जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पना प्रधान एवं सूक्ष्म है। प्रारम्भ में 'छायावाद' का प्रयोग व्यंग्य रूप में उन कविताओं के लिए किया गया जो अस्पष्ट थी, जिनकी 'छाया' (अर्थ) कहीं और पड़ती थी, किन्तु कालान्तर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी।

छायावाद की प्रमुख परिभाषाएँ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों से समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्ध काव्य वस्तु से होता है, अर्थात् जहां कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यनत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। ..... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।''

2. जयशंकर प्रसाद

''जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएं हैं।''

3. डॉ0 रामकुमार वर्मा

''परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।''

4. डा0 नगेन्द्र

''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद एक विशेषकर प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।''

5. महादेवी वर्मा

''छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन एक उद्गीथ है। .... उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।''

6. डॉ0 रामविलास शर्मा

''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा, वरन थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती साम्राज्यवादी बन्धनों के प्रति विद्रोह रहा है। यह विद्रोह मध्यवर्ग के तत्वाधान में हुआ था इसलिए उसके साथ मध्यवर्गीय असंगति, पराजय और पलायन की भावना भी जुड़ी हुई है।''

7. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

''छायावाद के मूल में पाश्चात्य रहस्यवादी भावना अवश्य थी। इस श्रेणी की मूल प्रेरणा अंग्रेजी को रोमांटिक भाव धारा की कविता से प्राप्त हुई थी और इसमें सन्देह नहीं कि उक्त भावधारा की पृष्ठभूमि में इसाई सन्तों की रहस्यवादी साधना अवश्य थी।''

उक्त परिभाषाओं के आलोक में छायावादी काव्य के निम्नलक्षण निरूपित किए जा सकते हैं :

1. छायावादी काव्य में रहस्यवादी प्रवृति रहती है।
2. छायावादी कविता प्रेम, सौन्दर्य एवं प्रकृति का काव्य है।
3. छायावाद में स्थूलता के स्थान पर सूक्ष्मता रहती है।
4. छायावाद के शैली–शिल्प एवं अभिव्यंजना पद्धति में नवीनता है।
5. छायावाद में स्वानुभूति की प्रधानता है।

उक्त लक्षणों के आलोक में छायावाद की एक सर्वमान्य परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है;

''प्रेम, प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।

छायावादी काव्य की विशेषताएं

छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से अपने पूर्ववर्ती काव्य से अलग है। इस काव्यधारा की प्रमुख प्रवृतियों का निरूपण निम्न शीर्षकों के अर्न्तगत किया जा सकता है।

1. आत्माभिव्यंजन

छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया। अपने जीवन के निजी प्रंसगों, घटनाओं एवं व्यक्तिगत भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य–वस्तु बनाया। छायावादी कविता में वैयक्तिक, सुख–दुख की खुलकर अभिव्यक्ति हुई। प्रसाद कृत 'आंसू' काव्य और पंत कृत 'उच्छवास' नामक कविता इस कथन के समर्थन में पेश की जा सकती है। पन्त जी ने अपनी 'प्रिया' को मन मन्दिर में बसाकर उसे पूजने का उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया है।

विधुर उस के मृदुभावों से तुम्हारा कर नित नव श्रृंगार।
पूजता हूँ मैं तुम्हें कुमारि, मूंद दुहरे दृग द्वार।। – पन्त

निराला की कई कविताओं में उनके व्यक्तिगत जीवन का सत्य व्यक्त हुआ है। 'राम की शक्तिपूजा' में राम की हताशा, निराशा में कवि के अपने जीवन की निराशा की अभिव्यक्ति हुई है। उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध को झेलना पड़ा उसकी गूंज निम्न पंक्तियों में है –

''धिक जीवन जो पाता ही आया है विरोध।
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।। – निराला

2. सौन्दर्य – चित्रण

छायावादी कवि मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि है; किन्तु उनकी सौन्दर्य भावना सूक्ष्म एवं उदात्त है। सौन्दर्य चित्रण में उनकी वृत्ति ब्राह्म वर्णनों में उतनी नहीं, रमी, जितनी आन्तरिक सौन्दर्य के उद्घाटन में एवं दशाओं के वर्णन में रमी। नेत्रों के सौन्दर्य एवं उसके प्रभाव की व्यंजना निम्न पंक्तियों में प्रसाद जी ने अत्यन्त आकर्षक ढंग से की है –

कमल से जो चारू दो खंजन प्रथम।
पंख फड़काना नहीं थे जानते।।
चपल चोखी चोट कर अब पंख की।
विकल करते भ्रमर को आनन्द से।। – प्रसाद

शारीरिक अंगो की कान्ति का वर्णन भी उसमें बड़े आकर्षक ढंग से हुआ है। कामायनी में प्रसाद जी ने श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन निम्न प्रकार किया है –

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बन बीच गुलबी रंग।। – प्रसाद

3. श्रृंगार – निरूपण

द्विवेदी युगीन कविता में श्रृंगार – निरूपण बहुत कम हुआ है जहां हुआ है वहां भी मर्यादित रूप में ही है। छायावाद में आकर कविता में पुनः श्रृंगार की प्रतिष्ठा हुई। इन कवियों ने श्रृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों के आकर्षक चित्र अंकित किए। निराला ने 'जूही की कली' नामक कविता में प्रकृति के प्रतीकों से प्रेम व्यापारों का निरूपण किया। –

निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की।
झोंको की झाड़ियों से,
सुन्दर सुकुमार देह,
सारी झकझोर डाली। – निराला

पन्त के काव्य में प्रेम और श्रृंगार भावना की बड़ी सहज अभिव्यक्ति हुई है। प्रिया का आकर्षण मन को पागल कर देता है :

''तुम हो लावव्य मधुरिमा जो असीम सम्मोहन
तुम पर प्राण निछावर करने पागल हो उठता मन।
नहीं जानती क्या निज बल तुम, निज अपार आकर्षण ?''
– पन्त

वियोग श्रृंगार के अति भव्य चित्र प्रसाद कृत आंसू में उपलब्ध होते हैं।

प्रिया के वियोग से मन की विकलता कितनी तीव्र हो गई है, इसका चित्र इन पंक्तियों में देखा जा सकता है :

झंझा झकोर गर्जन था बिजली थी नरिद माला।
पाकर इस शून्य ह्रदय को सबने आ घेरा डाला।। – प्रसाद
रो–रोकर सिसक–सिसक कर कहता मैं करूण कहानी
तुम सुमन नोचते सुनते करते जानी अनजानी।। – प्रसाद

कविवर पन्त ने भी वियोग व्यथा का मार्मिक वर्णन अपनी कविताओं में किया है। वे तो यह मानते हैं कि कविता का जन्म ही वियोग व्यथा से हुआ होगा। उस प्रेमी की आहों ने ही कविता का रूप

धारण कर लिया होगा :

''वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आंखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान।।'' – पन्त

प्रिया का ध्यान हृदय में वेदना की कसक उत्पन्न कर उसे अधीर कर देता है :

''तड़ित सा सुमुखि तुम्हारा ध्यान
प्रभा के पलक मार उर चीर।
गूढ़ गर्जन कर जब गम्भीर,
मुझे करता है अधिक अधीर।
जुगुनुओं से उड़ मेरे प्राण,
खोजते हैं तब तुम्हें निदान।।'' – पन्त

4. नारी भावना

छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपनाकर समाज में उसके सम्मानीय स्थान को प्रतिष्ठित किया। रीतिकालीन कवियों ने नारी को विलास की वस्तु और उपभोग की सामग्री मात्र माना, जबकि छायावादी कवियों ने उसे प्रेरणा का पावन उत्स मानते हुए गरिमा प्रदान की। वह दया, क्षमा, करूणा, प्रेम की देवी है और अपने इन गुणों के कारण श्रद्धा की पात्र है :

''नारी तुम केवल हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।। – प्रसाद

पन्त ने 'देवि, माँ, सहचरि, प्राण कहकर नारी के प्रति अपने आदर का परिचय दिया। प्रसाद जी के हृदय में नारी का बहुत ऊँचा स्थान था। निम्न पंक्तियों से उनके विचारों को जाना जा सकता हैः

''तुम देवि! आह कितनी उदार
वह मातृमूर्ति है निर्विकार।
हे सर्वमंगले! तुम महती
सबका दुःख अपने पर सहती।। – पन्त

निराला ने भी नारी को पुरूष के हृदय में आशा का संचार करने वाली शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया। 'राम की शक्ति पूजा' में राम के निराश हृदय में सीता की स्मृति मात्र से आशा का संचार होते दिखाया गया है :

''ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विधुत।
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि अच्युत।। – निराला

5. रहस्य – भावना

छायावादी काव्य में रहस्यवाद की प्रवृति भी प्रमुख रूप से उपलब्ध होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसी कारण 'छायावाद' का अर्थ 'रहस्यवाद' माना है। प्रायः सभी छायावादी कवियों ने अज्ञात सता के प्रति 'जिज्ञासा' के भाव व्यक्त किए हैं। पन्त की 'मौन निमन्त्रण' कविता में इसकी अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर ढंग से हुई है।

''न जाने कौन अए द्युतिमन,
जान मुझको अबोध अज्ञान।
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूंक देते छिद्रों में गान।।

प्रसाद जी ने 'कामायनी' में स्थान–स्थान पर उस अज्ञात सत्ता के अस्तित्व का बोध कराया है। पता नहीं वह अज्ञात सत्ता कौन है, कैसी है और क्या है :

''हे अनन्त रमणीय कौन तुम,
यह मैं कैसे कह सकता।
कैसे हो, क्या हो, इसका तो
भार विचार न सह सकता।। – प्रसाद

निराला की 'तुम और मैं' कविता में उस परमात्मा से अनेक प्रकार के सम्बन्ध जोड़े गए है। यदि वह हिमालय है तो मैं उससे निःसृत होने वाली गंगा, यदि वह हृदय के भाव हैं तो मैं उससे जन्म देने वाली कविता :

तुम तुंग हिमालय श्रृंग और मैं चंचल गति सुरसरिता।
तुम विमल हृदय उच्छवास और मैं कान्त कामिनी कविता।।
– निराला

6. प्रकृति – चित्रण

छायावादी कविता प्रकृति के कुशल चितेरे हैं। इन कवियों ने प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप करते हुए उसे हंसते–रोते हुए भी दिखाया है :

''अचिरता देख जगत की आप,
शून्य भरता समीर निश्वास।
डालता पातों पर चुपचाप,
ओस के आंसू नीलाकाश।।''

यहाँ वायु को ठण्ड़ी सांस भरते हुए, आकाश को रोते हुए दिखाया गया है। पन्त जी ने तो प्रकृति को ही अपनी काव्य–प्रेरणा माना है और वे प्रकृति सौन्दर्य को नारी सौन्दर्य पर वरीयता देते हैं 'मोह' नामक कविता में वे स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि नारी सौन्दर्य में आकर्षण होता है, पर वह इतना नहीं कि प्रकृति सौन्दर्य की उपेक्षा करवा सके :

छोड़ द्रुभों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले! तेरे बाल–जाल में कैसे उलाझा दूं 'लोचन',
भूल अभी से इस जग को। – पन्त

7. दुःख और वेदना की विवृति

छायावादी काव्य में दुःख और वेदना भाव की अभिव्यक्ति हुई है। महादेवी तो वेदना की ही कवयित्री है। वे अपने वेदना विहल हृदय की तुलना 'मेघखण्ड' से करती हुई कहती है :

''मैं नीर भरो दुःख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।।'' – महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा के गद्य–पद्य में जो दुःखवाद और करूणा के भाव दिखाई पड़ते हैं, वे बौद्ध दर्शन के प्रभाव स्वरूप माने जा सकते हैं। प्रसाद के 'आंसू' काव्य में भी वेदना की ही कहानी है। उन्होनें अपनी पीड़ा को ही काव्य के रूप में व्यक्त किया है :

''जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आंसू बनकर वह आज बरसने आई।। – प्रसाद

पन्त ने 'परिवर्तन' कविता में यह स्वीकार किया है कि संसार में दुःख की अधिकता है, यहां शान्ति जीवनपर्यन्त प्राप्त नहीं हो सकती

यहां सुख सरसों शोक सुमेरू,
अरे जग है जग का कंकाल।
वृथा रे यह अरूण – चीत्कार,
शान्ति सुख है उस पार।। – पन्त

8. राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति

छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर भी मुखरित हुए है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में जो गीत योजना की है, उसमें राष्ट्रीय भावना की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने भारत के अतीत गौरव के चित्र अंकित करते हुए देश की महिमा का बखान किया है :

अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
– प्रसाद

माखन लाल चतुर्वेदी के गीतों में राष्ट्रभक्ति अपने चरम उत्कर्ष पर है। 'पुष्प की अभिलाषा' में उन्होंने एक पुष्प की यह इच्छा व्यक्त की है कि उसे शहीदों के चरणों तले आने का सौभाग्य मिलेः

''मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।
– माखनलाल चतुर्वेदी

9. शैलीगत प्रवृतियां

छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीनता लिए हुए है। लाक्षणिक भाषा का प्रयोग, प्रतीकात्मक शैली, उपचारवक्रता एवं नवीन अलंकार विधान के कारण इस काव्य में शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है। पन्त को अग्र पंक्तियों में प्रतीकात्मकता एवं लाक्षणिकता को देखा जा सकता है :

अभी तो मुकुट बंधा था माथ
हुए कल ही हल्दी के हाथ
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले भी चुम्बन शून्य कपोल।
हाय रूक गया यही संसार
बना सिन्दूर अंगार।
वातहत लतिका वह सुकुमार
पड़ी है छिन्नाधार।। – पन्त

छायावाद की वैचारिक पृष्ठभूमि

छायावादी काव्य की एक सुदृढ़ वैचारिक पृष्ठ भूमि है जो द्विवेदीयुगीन इतिवृतात्मकता, नैतिकता एवं स्थूलता का विरोध करती है। भारत के अतीत गौरव के प्रति सचेष्ट छायावादी कवि व्यक्ति की स्वाधीनता के साथ–साथ हर प्रकार की दासता के विरूद्ध आवाज उठाते हैं। यह दासता आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक किसी प्रकार की हो सकती है।

इसमें राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित है, गांधीवादी जीवन मूल्य है तथा वे मानवतावाद के पोषक हैं उनका रहस्यवाद भले ही विद्वानों के अनुसार अंग्रेजी की रोमाण्टिक काव्यधारा से समुद्भूत रहा हो, किन्तु वे प्रकृति, प्रेम और सौन्दर्य को अपने काव्य में प्रमुखता से अभिव्यक्ति देते रहे।

अंग्रेजों ने इस देश को गुलाम बनाकर यहां का आर्थिक शोषण प्रारम्भ किया इसलिए उनके प्रति जनता का आक्रोश स्वाभाविक रूप से फूट पड़ा और महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई एक नये रूप में लड़ी गई। इस युद्ध के हथियार थे सत्य, अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह, नैतिकता, असहयोग एवं कष्ट सहिष्णुता। छायावादी रचनाओं के समान्तर चलने वाली राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता में इन्हीं जीवन मूल्यों को काव्य वस्तु बनाया गया और यह कहना समीचीन होगा कि छायावादी कविता भी इन जीवन मूल्यों से प्रभावित हुई। प्रसाद की कविताओं के अतिरिक्त उनकी कहानियों एवं नाटकों के प्रमुख पात्र देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना के साथ–साथ त्याग, सेवा, क्षमा, करूणा, परोपकार, बलिदान की भावनाओं से ओत–प्रोत है।

भारतीय जनमानस में आशा, उत्साह एवं आत्मविश्वास का संचार करने के लिए इन कवियों ने भारत के अतीत गौरव का गान किया। प्रसाद के गीत ''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती'' में भारत महिमा का विशद वर्णन है। निराला ने अपनी 'दिल्ली' नामक कविता में भारत के अतीत गौरव एवं वर्तमान दुर्दशा का चित्रण करते हुए लिखा :

''क्या यह वही देश है –
भीमार्जुन आदि का कीर्ति क्षेत्र
चिरकुमार भीष्म का पताका ब्रह्मचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में
उज्जवल अधीर और चिरनवीन।।

वस्तुतः इन कवियों ने वर्तमान को अतीत से सम्बद्ध करके जो जीवन मूल्य निर्मित किए वे समकालीन जीवन के लिए आदर्श बन सकते हैं। दीन–दुखियों एवं पद दलितों में ईश्वर का निवास मानते हुए इनकी सेवा को ईश्वर सेवा बताया गया। इस प्रकार भदवद्भक्ति और लोक कल्याण की भावनाओं में समन्वय किया गया। आध्यात्मिक और सामाजिकता का समन्वय जीवन के चहुमुंखी विकास के लिए आवश्यक है।

छायावाद का जीवन–दर्शन भी आशावादी एवं संसार में प्रवृत करने वाला है। कामायनी में जिस जीवन–दर्शन का उल्लेख है, वह प्रवृतिमार्गी है। कामायनी में शैव दर्शन के अन्तर्गत आने वाले प्रत्यभिज्ञा दर्शन की मान्यताओं को स्वीकार किया गया है। शैव दर्शन में संसार को 'चिति' का स्वरूप बताते हुए उसे नित्य माना गया है। जब संसार उस 'चिति' का स्वरूप है तो यह भी सत्य एवं सुन्दर है इसलिए सब उसमें प्रवृत होते हैं। कामायनी की श्रद्धा मनु को संसार में प्रवृत करती हुई कहती है :

कर रही लीलामय आनन्द
महाचिति सजग हुई सी व्यक्त।
विश्व का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते अनुरक्त।।

उस समय ऐसे ही विचारों की आवयकता थी, जिससे युवक देश के लिए अपना सब कुछ न्योछवार करने को तैयार हो जाएं। पलायनवादी भावनाओं का खण्ड़न करना युगीन आवश्यकता थी। सच तो यह है कि इस काल में लिखी गई अनेक रचनाएं तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक उद्‌देश्यों को ध्यान में रखकर लिखी गई तथा इनमें मानवतावाद एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठता की गई है।
कामायनी में प्रसाद जी ने बुद्धिवाद से पीड़ित हमारे वर्तमान युग को हृदय और बुद्धि के सन्तुलित समन्वय का रास्ता दिखाया और यह प्रतिपादित किया कि जीवन में आनन्द की प्राप्ति तभी संभव है जब हृदय और बुद्धि का सन्तुलित समन्वय किया जाता है। वे इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय पर भी बल देते दिखाई पड़ते हैं :

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की।।

छायावादी कवि
छायावाद के चार स्तम्भ माने जाते है जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त और महादेवी वर्मा। इनके अतिरिक्त माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामनरेश त्रिपाठी, डा0 रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्‌ट, मोहन लाल महतो वियोगी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, जनार्दन प्रसाद 'झाद्विज' आदि को भी गणना छायावादी कवियों में होती है।

1. जयशंकर प्रसाद
जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई0 में काशी में सुंघनी शाहु नाम प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता देवी प्रसाद साहु काव्य–प्रेमी थी। जब इनका देहांत हुआ तब प्रसाद जी की आयु केवल आठ वर्ष की थी। फलतः जयशंकर प्रसाद की पढ़ाई बाधित हुई। इनके बड़े भाई ने व्यापार को संभालकर परिवार की दशा को सुधारा। परन्तु कुछ ही वर्षों के बाद उनका भी देहान्त हो गया तब जयशंकर प्रसाद को पैतृक व्यापार सम्भालना पड़ा। वे दुकान पर बैठकर ही काव्य–रचना करते थे। इन्हें अपने जीवन में परिवारजनों की मृत्यु, आर्थिक संकट, पत्नी वियोग आदि कष्टों को झेलना पड़ा फिर भी वे काव्य साधना में लीन रहे। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रतिभावन कवि थे। उन्हें छायावाद का प्रवत्तर्क कहा जाता है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की कहानी, नाटक, उपन्यास, आलोचना आदि विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। काव्य साधना करते हुए यक्ष्मा के कारण उनका देहांत 15 नवम्बर 1937 में हुआ।

रचनाएँ
जयशंकर प्रसाद के प्रमुख काव्य ग्रंथो में 'चित्राधार' कानन–कुसुम, झरना, लहर, प्रेम–पथिक, आँसू (काव्य–संग्रह), कामायनी (महाकाव्य) आदि का नाम लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इन्होनें 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'अजातशत्रु', 'जनमेजय का नागयज्ञ' 'ध्रुवस्वामिनी', 'कामना', राज्य श्री और 'एक घूंट' आदि नाटकों की रचना की और उनमें भी अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया। छाया, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल, आकाशद्वीप आदि अनेक कहानी–संग्रह हैं। कंकाल, तितली, इरावती (अधूरा) उनके उपन्यास है।

प्रसाद काव्य की विशेषताएँ
प्रसाद जी को छायावाद का प्रमुख स्तम्भ कहा जाता है। उनकी काव्यगत विशेषताओं में रहस्यवाद, विरहवेदना, प्रेम और सौन्दर्य नारी के प्रति उदात्त भावना, प्रकृति चित्रण आदि का नाम लिया जा सकता है। आचार्य शुक्ल के अनुसार, साधना के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है। प्रसाद की कविताओं में रहस्य भावना सहज रूप में ही मिलती है। 'कामायनी' की निम्नलिखित पंक्तियों में उनकी रहस्य भावना देखिए –

महानीत इस परम व्याम में अंतरिक्ष में ज्योतिमनी।
यह नक्षत्र और तारागण किसका करते हैं संधान।।

उनकी कविता में विरह की तीव्र वेदना का चित्रण हुआ है। आंसू में तो विरह–वेदना पग–पग पर दिखाई है। प्रसाद–काव्य की निम्नलिखित पंक्तियों में करूणा और वेदना की भावना देखिए –

इस करूणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में,
वेदना असीम गरजती।।

प्रसाद जी के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य की भावना का भी निरूपण हुआ है। उनका हृदय प्रेम और सौन्दर्य की भावना से अनुप्राणित है। उन्होंने अपने काव्य में प्रेम के स्थूल और माँसल स्वरूप के स्थान पर प्रेम के अशरीरी स्वच्छ और निर्मल रूप को चित्रित किया है –

उज्जवल वरदान चेतन का,
सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।

प्रसाद जी ने अपने काव्य में नारी के ब्रह्म रूप का चित्रण न करके उसके आंतरिक सौन्दर्य को प्रस्तुत किया है। उनकी कविता में नारी के सूक्ष्म सौंदर्य का चित्रण हुआ है। वे नारी के रूप सौंदर्य का अत्यन्त मोहक, संजीव और मार्मिक चित्रण करते हुए कहते हैं –

चचंला स्नान कर आवे, चन्द्रिका–पर्व में जैसी।
उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी।।

लगभग सभी छायावादी कवियों में प्रकृति–चित्रण करने की विशेष प्रवृति पाई जाती है। प्रसाद जी ने भी अपने काव्य में प्रकृति में अनेक सुन्दर चित्र अंकित किए हैं। वे प्रकृति के कवि ही नहीं, अनुपम चित्रकार भी हैं। उन्होंने अपना सुख–दुःख, आशा–निराशा, हर्ष–विषाद प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया है। प्रसाद जी के काव्य में चित्रित प्रकृति जड़ नहीं बल्कि चेतन है।

''बीती विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही,
ताराघर ऊषा– नागरी,
खग कुल–कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा।''

उन्होंने अपने काव्य में रस की सुन्दर योजना की है। 'आंसू' उनका सफल विरह–काव्य है और इसमें श्रृंगार–रस का परिपाक हुआ है। उनके काव्य में भयानक, अद्‌भुत वात्सल्य, रौद्र व करूण रस का भी सुन्दर निर्वाह हुआ है। उनकी कविता में भाषा चित्रमयी है। उनकी काव्य–भाषा में प्रसाद, माधुर्य और ओज तीनों गुण मिलते हैं। उनकी काव्य–भाषा एवं शैली का एक सुन्दर उदाहरण –

शशि मुख पर घूंघट डाले
अचंल में दीप छिपाए।
जीवन की गोधूली में
कौतूहल में तुम आए।।

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में सन् 1869 ई0 में बसन्त पंचमी के दिन हुआ था। इनके पिता का नाम प0 रामसहाय त्रिपाठी था और वे उन्नाव जिले के रहने वाले थे। वे मेदिनीपुर रियासत में नौकरी करते थे। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की घर पर ही शिक्षा का श्री गणेश हुआ। उनकी प्रकृति में प्रारम्भ से ही स्वच्छन्दता थी अतः वे मैट्रिक से आगे न पढ़ सके। 14 वर्ष की आयु में इनका विवाह मनोहरा देवी के साथ हो गया था। पिता जी की मृत्यु के बाद इन्होंने भी रियासत की नौकरी कर ली थी।

पिता की मृत्यु का आघात, बाईस वर्ष की अवस्था में पत्नी का स्वर्गवास, पुत्री सरोज की मृत्यु, आर्थिक संकटों, संघर्षों और जीवन की यथार्थ अनुभूतियों ने निराला जी के जीवन की दिशा ही मोड़ दी। अतः ये रामकृष्ण मिशन, अद्वैत आश्रम बैनूर मठ चले गए। वहाँ इन्होंने दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया। इसके पश्चात् वे कलकते से प्रकाशित होने वाले 'मतवाला' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक बने। उसके बाद ये लखनऊ आ गए तथा बाद में इलाहाबाद चले गए। अन्त तक स्थाई रूप से इलाहाबाद रहकर आर्थिक संकटों एवं अभावों की दुनिया में रहते हुए भी इन्होंने बहुमुखी साहित्य की सृष्टि की। वे गम्भीर दार्शनिक, आत्मभिमानी एवं मानवतावादी थे। करूणा, दयालुता,दानशीलता एवं संवेदनशीलता इनके जीवन की प्रमुख विशेषताएँ थी। वे दीनदुखियों और असहायों के सहायक थे। हिन्दी साहित्य का यह महारथी 15 अक्टूबर 1961 ई0 को सदा के लिए भारत–भूमि को त्याग कर चला गया।

रचनाएँ

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की प्रमुख कृतियों में परिमल, गीतिका, तुलसीदास,अनामिका, अर्चना, अणिमा,आराधना, कुकुरमुता आदि का नाम लिया जा सकता है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती, काले–कारनामें आदि उनके प्रमुख उपन्यास है। सुकुल की बीबी, लिली,सखी, अपना घर, चतुरी चमार आदि उनकी प्रमुख कहानियां है। प्रबन्ध पदम, प्रबन्ध प्रतिभा, प्रबन्ध परिचय, चाबुक,रवीन्द्र कानून आदि उनके आलोचनात्मक निबन्ध हैं। कुल्ली भाट, बिलेसुर राणा प्रताप, भीष्म, महाभारत, प्रहलाद,ध्रुव, शकुन्तला आदि उनकी अन्य गद्य कृतियाँ है।

निराला जी के काव्य की प्रमुख विशेषताओं में मानवतावाद, नारी व शोषितों के प्रति संवेदना, प्रकृति–चित्रण आदि है। उनकी कविताओं में शक्ति और अदम्य है। श्रृगांर है, दार्शनिकता है, देश–प्रेम है, सामाजिक वैषम्य के प्रति विद्रोह है। मानवता के प्रति करूणा संवेदना और टीस है, उन्माद और सिंह गर्जना, छायावाद हैं, रहस्यवाद है, प्रगतिवाद है, मानवतावाद हैं। इसका कारण यह है कि निराला जी की काव्यधारा छायावाद से आंरभ हुई और वह प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि के मोड़ों से गुजरती हुई सन् 1961 तक प्रवाहित होती रही। भारतीय विधवा का एक भावपूर्ण चित्र–

वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी।
वह दीप शिखा सी शान्त, भाव में लीन।
वह क्रुर काल–ताण्डव की स्मृति रेखा सी,
वह टूटे तरू की छुटी लता–सी।
दलित भारत की ही विधवा है।

वर्तमान पूंजीवाद के प्रति विद्रोह

अबे, सुनबे गुलाब।
भूल मत, गर पाई खुशबू रंगी–आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा के पीट लिस्ट।

समाज की विषमता

विप्लव एव से छोटे ही शोभा पाते।
अट्टालिका नहीं है रे
आतंक भवन।

निराला जी के काव्य में अतुकान्त गीत शैली का प्रयोग हुआ है जो बंगला शैली से प्रभावित है। उनकी काव्य भाषा ओज एवं प्रभावपूर्ण है। उनके काव्य में श्रृगांर व वीर रसों का प्राधान्य है। उनकी दार्शनिक रचनाओं में कहीं–कहीं शान्त रस का भी परिपाक हुआ है। निराला जी ने अपने काव्य में अनुप्रास, उपमा,रूपक सन्देह आदि अंलकारों का अधिक प्रयोग किया है। निराला जी ने उपमाओं के लिए नवीन उपमानों का सृजन किया है।

3. सुमित्रानन्दन पन्त

पन्त जी का जन्म अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा में स्थित कोसानी ग्राम में 20 मई 1900 ई0 में हुआ। इनके पिता का नाम प0 गंगादत था। इनके जन्म के कुछ घण्टों के बाद ही इनकी माता सरस्वती का निधन हो गया। अतः इनका जीवन प्रकृति की सुरम्य गोद में ही बीता। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा वाराणसी में तथा बाद में इलाहाबाद के 'म्योर सैंट्रल' कॉलेज में हुई। 1921 ई0 के असहयोग में उन्होंने कॉलेज छोड दिया और साहित्य–साधना को ही जीवन का ध्येय बना लिया। उन्होंने प्रकृति का आकर्षक और सूक्ष्म चित्रण किया है। हिन्दी साहित्य में इनका वही स्थान है जो अंग्रेजी साहित्य में 'वर्डस वर्थ' का सन् 1977 ई0 में उनका देहान्त हो गया।

रचनाएँ

सुमित्रानन्दन पंत की काव्य–यात्रा सुदीर्घ है। उनकी प्रमुख काव्य रचनाओं में वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, युगान्त, उच्छ्‌वास, कला और बूढ़ा चाँद,, चिदम्बरा, लोकायतन, युगवाणी आदि का नाम लिया जा सकता है। 'चिदम्बरा' पर उन्हें एक लाख रूपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। पन्त जी प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में प्रसिद्व हैं परन्तु उन्हें प्रकृति का सुकुमार और मधुर रूप ही प्रिय है, भंयकर रूप नहीं। वे प्रकृति के इतने बड़े उपासक हैं कि वे प्रकृति की रमणीयता छोड़कर बाला के

बाल–जाल में भी उनके नेत्र नहीं उलझते–

''छोड़ द्रमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति की भी माया।
बाले तेरे बाल–जाल में,
कैसे उलझा दूँ लोचन
छोड़ अभी से इस जग को।

प्रकृति प्रेम ने उसके ह्रदय में जिज्ञासा उत्पन्न की। वे पहले छायावादी और फिर रहस्यवादी हो गए। प्रकृति के विराट–सौन्दर्य ने उनके ह्रदय में अज्ञात आकर्षण को जन्म दिया। वे बाल विंहगिनी से प्रथम रश्मि के आगमन का रहस्य पूछते हुए कहते हैं–

प्रथम रश्मि का आना;
रंगणि तूने कैसे पहचाना।
कहाँ–कहाँ से बाल विहंगम,
पाया तूने वह गाना।।

पन्त जी नारी मर्यादा के पोषक भी हैं। उनके काव्य में नारी के प्रति अपार स्नेह–सम्मान झलकता है। वे नारी को पूज्य एवं पावन मानते हैं तथा उन्होंने नारी–हदय को ही स्वर्ग माना है–

यदि स्वर्ग कहीं है पृथ्वी पर
ते वह नारी डर के भीतर,
दल पर दल खोल हदय के स्तर
जब बिठलाती प्रसन्न होकर,
वह अमर प्राण के शतदल पर।

उनकी प्रगतिवादी रचनाओं में मानवतावादी विचारों की झलक मिलती है। जैसे–
इसमें मानव समता के दाने बोने हैं,

जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें,
मानवता की–जीवन श्रम से हंसे दिशाएँ।।

पंत जी अनेक कविताओं में अव्यक्त सता के प्रति जिज्ञासा तथा मिलन इच्छा का भाव भी दिखाई देता है। यथा–

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु–सा नादान,
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अजान,
न जाने नक्षत्रों से कौन ?
निमंत्रण देता मुझको मौन।

आगे चलकर कविवर पंत पर अरविन्द–दर्शन का गहरा प्रभाव पड़ा। स्वर्ण–धूलि, स्वर्ण–किरण आदि काव्य–रचनाओं में कवि ने अरविन्द–दर्शन की आध्यात्मिक चेतना को प्रकट किया है–

सृजन करो नूतन मन।
खोल सके जो ग्रन्थि हदय की,
उठा सके जो सूक्ष्म नयन से
जीवन का सौन्दर्य गहन।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रकृति को कोमल रूप के उपासक पंत जी हिन्दी साहित्य में अपनी सुकुमार भावनाओं और कोमल कल्पनाओं के लिए प्रसिद्व हैं। प्रकृति के वे अनुपम चित्रकार हैं। पन्त जी छायावाद के प्रमुख कवि हैं। वे प्रगतिवाद के समर्थक हैं और महान चिन्तक भी हैं।

4. महादेवी वर्मा

कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई0 में उतर प्रदेश के फर्रूखाबाद नामक स्थान पर हुआ था। इनकी शिक्षा इन्दौर के मिशन स्कूल में हुई। नौ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह डां0 स्वरूप नारायण से कर दिया गया। विवाह के पश्चात् भी इनकी शिक्षा का क्रम चलता रहा। 1929 ई0 में इन्होनें संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उर्तीण की परन्तु इनका वैवाहिक जीवन अधिक सुखमय नहीं रहा। इसी कारण इन्होंने बौद्व धर्म की दीक्षा लेकर भिक्षुणी बनना चाहा, परंतु महात्मा गाँधी की प्रेरणा से वह समाज–सेवा के कार्य में लग गई।
स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने विशेष कार्य प्रारम्भ किया। वे प्रयाग महिला 'विधापीठ' की प्राध्यापिका बनी और महादेवी कन्या पाठशाला, देहरादून की स्थापना में अपना योगदान दिया। स्वन्त्रता प्राप्ति के बाद वे उतर–प्रदेश विधान परिषद की मनोनीत सदस्या बनीं । भारत सरकार ने इन्हें 1956 ई0 में पदम भूषण की उपाधि से अलंकृतम किया। 1960 ई0 में वे प्रयाग महिला विधापीठ की कुलपति बनी। उन्हें 'यामा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्रदान किया गया। 11 सितम्बर 1987 को इलाहााद में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ

महादेवी वर्मा के काव्य–सग्रंहों में नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीप–शिखा, सप्तवर्णा के नाम प्रमुखता के साथ लिए जा सकते हैं। 'यामा' में उनके पूर्ववर्ती काव्य संग्रहों (नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीप–शिखा) की कविताएँ संकलित हैं। श्रृंखला की कडियाँ, स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, मेरा परिवार, पथ के साथी आदि उनकी गद्य रचनाएँ हैं।
महादेवी वर्मा का सम्पूर्ण काव्य प्रेम भावना से ओत–प्रोत है। उनके प्रेम में गहराई हैं। जब वे अपने प्रेम में डूब जाती हैं तो उनका व्यक्तिगत प्रेम संकीर्ण धरातल से उठकर सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो जाता है परन्तु उनका प्रेम शारीरिक न होकर सात्विक उदात एवं अलौकिक है–

क्या पूजा क्या अर्चना रे।
उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।
मेरी श्वासें करती रहती नित प्रिय का अभिनन्दन रे।

महादेवी का काव्य विरह–वेदना से अनुप्राणित हैं। उनके लिए वियोग अवस्था मिलन–अवस्था से अधिक सुखकर है। उनके काव्य में वेंदना से उत्पन्न आन्नद, वेदना का सौन्दर्य और सौन्दर्य के प्रति आत्म–समर्पण आदि भावों का निरूपण हुआ है। वे दुःख को जीवन की स्फूर्ति, प्रेरणा–तत्व मानती हैं। वे पीड़ा में ही परमात्मा को पाती हैं तथा परमात्मा में भी पीड़ा को ही ढूढँना चाहती हैं–

तुझको पीड़ा में ढूँढ़ा, तुममे ढूँढूगी पीड़ा।

महादेवी जी के काव्य में विरह–वेदना के अतिरिक्त रहस्यवादिता, प्रकृति–चित्रण, संगीतात्मकता आदि प्रमुख विशेषताएँ भी पाई जाती हैं। महादेवी वर्मा प्रिय परमात्मा को अपने से अभिन्न मानती हैं तथा

उनकी आत्मा उस प्रियतम से मिलने के लिए आतुर रहती है–

जो तुम आ जाते एक बार।
गाता प्राणों का तार–तार।।

अन्य छायावादी कवियों की भांति महादेवी जी ने भी अपने काव्य में प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण किया है जिनमें प्रकृति का उद्दीपन रूप, आलम्बन रूप, मानवीकरण आदि प्रमुख है। उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति पर चेतना का आरोप किया है और उसके साथ विविध मधुर सम्बन्धों की कल्पनाएँ की हैं–

रजनी ओढ़े जाती थी
झिलमिल तारों की जाती,
उसके बिखरे वैभव पर
जब रोती थी उजियाली।

महादेवी जी ने अपने काव्य में भाषा तत्समपूर्ण शुद्व खड़ी बोली का प्रयोग किया है। उनकी काव्य भाषा की प्रमुख विशेषताओं में लाक्षणिकता, चित्रमयता, कल्पना, भाषा की कोमलता और संगीतात्मकता आदि का नाम लिया जा सकता है। प्रतीकात्मकता उनकी भाषा की एक अन्य प्रमुख विशेषता है। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य जगत की अमर कलाकार हैं। हिन्दी जगत में वे 'आधुनिक मीरा' के नाम से विख्यात हैं।

निष्कर्ष

कविता में जिस चित्रात्मक भाषा की आवश्यकता होती है और इसी गुण के कारण उसमें जो बिम्बग्राहिता आती है, छायावादी कवि इस कला में प्रवीण है। छायावादी काव्य धारा के विरोधी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को भी इनकी भाषा समर्थता का लोहा मानना पडा था। वे लिखते है कि ''छायावाद की शाखा के भीतर धीरे–धीरे काव्य–शैली का बहुत अच्छा विकास हुआ, इसमे संदेह नहीं। उसमें भावावेश की आकुल व्यंजना, लाक्षणिक वैचित्रय, मूर्त प्रत्यक्षीकरण, भाषा की वक्रता, विरोध–चमत्कार, कोमल पदविन्यास इत्यादि का स्वरूप संघटित वाली प्रचुर सामग्री दिखायी पडीं।''

अन्त में कहा जा सकता है कि छायावाद का केवल अठारह वर्ष की आयु में भले ही अन्त हो गया हो, पर उसने हिन्दी काव्य को जो नवसुरभित पुष्प, जो जीवन–सौदंर्य और जो नया मानवीय दृष्टिकोण दिया, वह उसे आधुनिक काल का स्वर्ण युग सिद्व करने के लिए पर्याप्त है। डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार–''इस कविता का गौरव अक्षय है। इसकी समृद्वि की समता केवल भक्तिकाल ही कर सकता है।''

संदर्भ

1. डॉ0 लाल चन्द गुप्त मंगल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ – 183
2. उपरिवत् पृष्ठ – 184
3. डॉ0 अशोक तिवारी–प्रतियोगिता साहित्य सीरिज पृष्ठ – 212
4. उपरिवत् पृष्ठ – 213
5. उपरिवत् पृष्ठ – 214
6. उपरिवत् पृष्ठ – 215
7. उपरिवत् पृष्ठ – 216
8. उपरिवत् पृष्ठ – 92
9. उपरिवत् पृष्ठ – 93
10. डॉ0 पवन कुमार यादव – हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ – 133
11. उपरिवत् पृष्ठ – 134
12. उपरिवत् पृष्ठ – 135
13. उपरिवत् पृष्ठ – 136
14. उपरिवत् पृष्ठ – 137
15. उपरिवत् पृष्ठ – 138
16. उपरिवत् पृष्ठ – 139
17. डॉ0 लाल चन्द गुप्त – हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ – 191